परिवार की विशेषताएं | Family Characteristics

1. सार्वभौमिकता– परिवार नाम की संस्था सर्वभौमिक है। यह समिति के रूप में प्रत्येक सामाजिक संगठन में पाई जाती है। या संस्था प्रत्येक समाज चाहे वह किसी भी सामाजिक विकास की अवस्था में हो, पाई जाती रही है। प्रत्येक मनुष्य परिवार का सदस्य रहता है, और उसे भविष्य में भी रहना पड़ेगा। परिवार संगठन केवल मनुष्य में ही नहीं अपितु पशुओं की अनेक जातियों में भी पाया जाता है।

2. भावात्मक आधार– यह समिति मानव की अनेक स्वाभाविक मूल प्रवृत्तियों पर आधारित है। परिवार की सदस्यता भावना से परिपूर्ण है। माता का प्रेम उसे बच्चों के लिए सब कुछ त्याग करने के लिए प्रेरित करता है। यह सब संवेदनात्मक भावना के कारण ही है। माता और पिता में संतान की कामना की मूल प्रवृत्ति पाई जाती है। इस मूल प्रवृत्ति के साथ–साथ उनके प्रति वात्सल्य भी पाया जाता है। परिवार को बनाए रखने में इनका महत्वपूर्ण भाग है।

3. सीमित आकार– परिवार का आकार सीमित होता है। उसके सीमित होने का प्रमुख कारण प्राणी शास्त्रीय दशाएं हैं। इनका सदस्य वही व्यक्ति हो सकता है जो परिवार में पैदा हुआ हो या विवाद या गोद लेने से उन में सम्मिलित हुआ हो। सामाजिक संगठन में तथा औपचारिक संगठन में परिवार सबसे छोटी इकाई है। विशेषता आधुनिक युग में इसका आकार सीमित हो गया है। क्योंकि अब परिवार रक्त समूह से बिल्कुल अलग कर दिया गया है। आजकल पति पत्नी और बच्चे ही इसके सदस्य होते हैं।

4. सामाजिक ढांचे केंद्रीय स्थिति– परिवार सामाजिक ढांचे में केंद्रीय स्थिति में है। यह सामाजिक संगठन की प्रमुख इकाई है। संपूर्ण सामाजिक ढांचा परिवार पर आधारित है। परिवार से अन्य सामाजिक संगठनों का विकास होता है।

5. सामाजिकरण की संस्था– परिवार का रचनात्मक प्रभाव भी होता है। मनुष्य का या प्रथम सामाजिक पर्यावरण है। सर्वप्रथम मनुष्य इसी समिति में अपना सामाजिकरण करता है। मनुष्य पर जो संस्कार बचपन में पड़ जाते हैं वह अमिट रह हैं। इन्हीं संस्कारों पर मनुष्य के व्यक्तित्व की रचना होती है।

6. सदस्यों का उत्तरदायित्व— परिवार में सदस्यों का उत्तरदायित्व सबसे ज्यादा होता है। परिवार एक प्राथमिक समूह है। प्राथमिक समूह के संबंध में कहा जा सकता है कि इनमें उत्तरदायित्व असीमित रहता है। परिवार के लिए मनुष्य हमेशा कार्य करता रहता है। वह इतना व्यस्त रहता है कि परिवार ही उसके लिए सब कुछ हो जाता है। परिवार में स्त्रिय और पुरुष दोनों ही कठिन परिश्रम करते हैं। परिवार के प्रति उत्तरदायित्व की भावना मनुष्य स्वभाव में ही पाई जाती है।

7. सामाजिक नियंत्रण— परिवार द्वारा सामाजिक नियंत्रण होता है। मनुष्य को यह नियम सिखाता है कि परिवार के अस्त जनवरी दिया प्रथाएं समाज निषेध और विधियां हैं। विवाह द्वार निश्चित नियम बना दिए जाते हैं। दो भागीदार इन नियमों में कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकते हैं। आधुनिक युग में कोई भ स्त्री या पुरुष अपनी इच्छा से विभाग द्वारा गठबंधन कर सकत हैं। अपनी इच्छा से एक दूसरे को नहीं छोड़ सकते। प्राचीन काल में तो यह नियम और भी कठोर थे। परिवार का नियंत्रण मुख्यता प्रेम एवं भावना पर आधारित था।

8. स्थाई एवं अस्थाई प्रकृति— परिवार समिति के रूप में अस्थाई हैं। दो पति पत्नी मिलकर एक समिति का निर्माण करते हैं। पति–पत्नी दोनों में से किसी के भी मर जाने पर यह समिति समाप्त हो जाती है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो परिवार अस्थाई हैं। परंतु परिवार के संस्था के रूप में देखा जा तो यह स्थाई हैं। परिवार संस्था के रूप में सदैव जीवित रहता है। केवल कार्य करने वाले व्यक्ति परिवर्तित होते रहते हैं।